अनुक्रमणिका

1	प्राचीन इतिहास का निर्माण	2
2	हड़प्पा / सिंधु घाटी सभ्यता	7
3	वैदिक कालीन इतिहास	12
4	संगम युग: दक्षिण भारत का इतिहास	21
5	मौर्य कालीन इतिहास	25
6	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	40
7	उत्तर मौर्य युग (*200 BC - 300 BC)*	55
8	गुप्त कालीन इतिहास [*300 CE- 600 CE]*	62
9	हर्षवर्धन और दक्षिणवर्ती शासक	69

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

1. प्राचीन इतिहास का निर्माण

ऐतिहासिक स्रोत - निम्नलिखित मूल स्रोत हैं जिनसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारीयां प्राप्त होती हैं/ इतिहास का निर्माण इन्हीं स्रोतों पर आधारित है।

स्रोत	साक्ष्य	जानकारी
भौतिक अवशेष:	**रेडियो कार्बन डेटिंग-** किसी वस्तु की आयु निर्धारित करने की एक विधि है। **दक्षिण भारत के पत्थर द्वारा निर्मित भव्य मंदिर**; पूर्वी भारत के **ईट द्वारा निर्मित मठ**; टीले की ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज खुदाई, महापाषाण/मेगालिथ (दक्षिण भारत)	• जीवन शैली की लगभग सभी पहलुवों से जैसे, **मिट्टी के बर्तनों का उपयोग, गृह-निर्माण योजना, कृषि (उत्पादित अन्न), पालतू जानवरों, उपकरणों के प्रकार, हथियार** आदि और समय तथा भौगोलिक अवस्थिति के अनुरूप **शवाधान की प्रथाओं से जानकारी मिलती हैं।** • **ऊर्ध्वाधर खुदाई** → विभिन्न भौतिक संस्कृति के कालानुक्रमिक विकास का पता चलता है। • **क्षैतिज खुदाई** → किसी विशेष संस्कृति के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है।
सिक्के :	सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (*numismatics*)** कहा जाता है। खुदाई से एकत्र किए गए सिक्के देश और देश के बाहर विभिन्न संग्रहालयों में सूचीबद्ध कर रखा गया हैं।	• प्रारंभिक सिक्कों में अधिक प्रतिकों का प्रयोग नहीं किया जाता था। राजाओं या जारीकर्ता के नाम (गिल्ड/व्यापारी), देवताओं या तिथियों का उल्लेख बाद के सिक्कों में किया जाने लगा था। ये सिक्के कालानुक्रम के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास के निर्माण में सहायक हैं। • **स्थानीय और सीमा पार लेन-देन में** इन सिक्कों का प्रयोग हमें विभिन्न शासक राजवंशों और उनके शासन की सीमा के बारे में जानकारी प्रदान करते है। **सिक्कों में प्रयुक्त धातु और सिक्कों की संख्या एक राज्य में व्यापार, वाणिज्य और वित्त की स्थिति की ओर इंगित करती है।** • उत्तर गुप्त कालीन कुछ सिक्के उस अवधि में व्यापार और वाणिज्य में गिरावट की ओर इंगित करते हैं।
	पुरालेखशास्त्र(*Epigraphy*) अभिलेखों का अध्ययन है। पुरालिपिशास्त्र (पेलियोग्राफी): शिलालेख और अन्य अभिलेखों पर प्राचीन लेखों का अध्ययन है।	• चित्रमय हड़प्पा अभिलेखों का अभी तक क्षय नहीं हुआ है। • **दक्षिण भारत -** मंदिर की दीवारों पर अभिलेख। • अभिलेखों से सामान्य जन, अधिकारी, सामाजिक, धार्मिक और प्रशासन (जैसे, अशोक के शिलालेख) के

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

अभिलेख	मुहरों, प्रस्तर स्तंभों, चट्टानों, तांबे की पत्रों, मंदिर की दीवारों और ईंटों या चित्रों पर उत्कीर्ण अभिलेख। सर्वप्रथम इन्हें प्राकृत *(300 ईसा पूर्व)* भाषा में लिखा जाता था, तत्पश्चात संस्कृत में और इसके बाद क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा जाने लगा।	बारे में जानकारी मिलती है, साथ ही शाही आदेश के बारे में भी पता चलता है। • **अशोक के अभिलेख:** ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और अरमाइक लिपियों का प्रयोग किया गया था। • दान, भूमि अनुदान और राजाओं तथा विजेताओं *(समुद्रगुप्त और पुलकेशिन द्वितीय आदि)* की उपलब्धियों का वर्णन।
साहित्यिक स्रोत:	चार वेद, रामायण और महाभारत, स्मृतियाँ और धर्म सूत्र, महाकाव्य, जैन और बौद्ध ग्रंथ, साहित्य, संगम साहित्य, नाटक आदि।	• हमें प्राचीन काल की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। • भारत में सबसे प्राचीन पांडुलिपियां बर्च की छाल और ताड़ के पत्तों पर लिखी गई थीं। • **कौटिल्य का** *'अर्थशास्त्र'* एक राज्य और उसकी अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्रशासन और समाज का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करता है। • पुराण, गुप्त काल तक का राजवंशीय इतिहास प्रदान करते हैं। • ये स्रोत भाषा, लिपि और लेखन की शैली के उपयोग के संदर्भ में भी जानकारी प्रदान करते हैं।
विदेशी विवरण	यूनानी, रोमन या चीनी आधिकारिक इतिहासकार या राजनयिक तथा तीर्थ यात्रियों या नाविक/ खोजकर्ता आदि के विवरण।	• **सिकंदर के आक्रमण की जानकारी** पूरी तरह से ग्रीक स्रोतों पर आधारित है। • **मेगस्थनीज की "इंडिका"** मौर्य काल के बारे में जानकारी प्रदान करता है। • भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार असंतुलन का **वर्णन** प्लिनी के **"नेचुरल हिस्टोरिका "** से प्राप्त होता है। • इन यात्रियों का उस समय के राजाओं ने स्वागत किया और उन्होंने लगभग हर उस पहलू के बारे में लिखा जो उन्होंने वहाँ देखा था, जैसे वास्तुकला, सामाजिक विभाजन, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएं आदि।

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

प्रागैतिहासिक काल

विषय-सूची

क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	आर्थिक संवृद्धि	1
2	भारत में आर्थिक आयोजन	13
3	कृषि	17
4	उद्योग	35
5	भारत के सेवा क्षेत्र	46
6	मुद्रास्फीति	50
7	भारतीय बीमा बाजार	59
8	मुद्रा बाज़ार	67
9	भारत में बैंकिंग क्षेत्र	69
10	कराधान	93
11	लोक वित्	107
12	भारत का बाह्य क्षेत्र	114
13	भारत में सुरक्षा बाजार	128
14	मानव विकास और सतत विकास	144
15	महत्वपूर्ण सूचकांक और रिपोर्ट	154
16	अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण अवधारणाएँ	156

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

1. आर्थिक संवृद्धि

अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जिसके अंतर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण और उपयोग का अध्ययन किया जाता है।

समष्टि अर्थशास्त्र:	इसके अंतर्गत संपूर्ण अर्थव्यवस्था (उत्पादन, उपभोग, बचत और निवेश) और इसको प्रभावित करने वाले सभी कारकों का विश्लेषण किया जाता है, जिसमें संसाधनों की बेरोजगारी (श्रम, पूंजी और भूमि), मुद्रास्फीति, आर्थिक वृद्धि और इन नीतियों (मौद्रिक) से संबंधित सार्वजनिक नीतियां भी शामिल हैं (जैसे कि राजकोषीय और अन्य नीतियां)।
व्यष्टि अर्थशास्त्र:	इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के व्यक्तिगत अवयव का अध्ययन किया जाता है जैसे कि परिवार, कोई विशेष कम्पनी या श्रमिक आदि।

अर्थव्यवस्था के प्रकार

पारंपरिक अर्थव्यवस्था	• पारंपरिक अर्थव्यवस्था प्रणाली में वस्तु विनिमय प्रणाली का उपयोग किया जाता है तथा इसमें मुद्रा या धन की कोई अवधारणा नहीं होती है। • इस तरह की अर्थव्यवस्थाओं का यह मानना है कि जितनी जरूरत है उतना ही उत्पादन किया जाए। उन्हें किसी भी बाजार अधिशेष का उत्पादन करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
बाजार अर्थव्यवस्था	• इसमें सरकार या किसी भी नियंत्रण शक्ति का कोई दखल या हस्तक्षेप नहीं है। • पूरी अर्थव्यवस्था, अर्थव्यवस्था के प्रतिभागियों और मांग और आपूर्ति के कानूनों द्वारा निर्धारित की जाती है। उदाहरण - संयुक्त राज्य अमेरिका और हांगकांग।
कमांड अर्थव्यवस्था/योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था	• इस आर्थिक प्रणाली में एक केंद्रीकृत शक्ति होती है, जो ज्यादातर मामलों में सरकार होती है। • ऐसी अर्थव्यवस्थाओं को योजनाबद्ध अर्थव्यवस्थाओं के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि सरकार अर्थव्यवस्था के सभी योजना का निर्माण करती है, मुफ्त बाजार द्वारा कुछ भी तय नहीं किया जाता है। • उदाहरण - क्यूबा और चीन।
मिश्रित अर्थव्यवस्था	• यह कमांड अर्थव्यवस्था और मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था का एक उचित समन्वय है। • यह अर्थव्यवस्था सरकार के हस्तक्षेप से मुक्त होता है। परन्तु जब भी सरकार को आवश्यक महसूस होती है तो वह बाजार को विनियमित कर सकती है साथ ही सरकार अर्थव्यवस्था के विशिष्ट संवेदनशील क्षेत्रों जैसे परिवहन, सार्वजनिक सेवाओं, रक्षा आदि को भी विनियमित और देखरेख करती है। • उदाहरण - भारत और फ्रांस

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

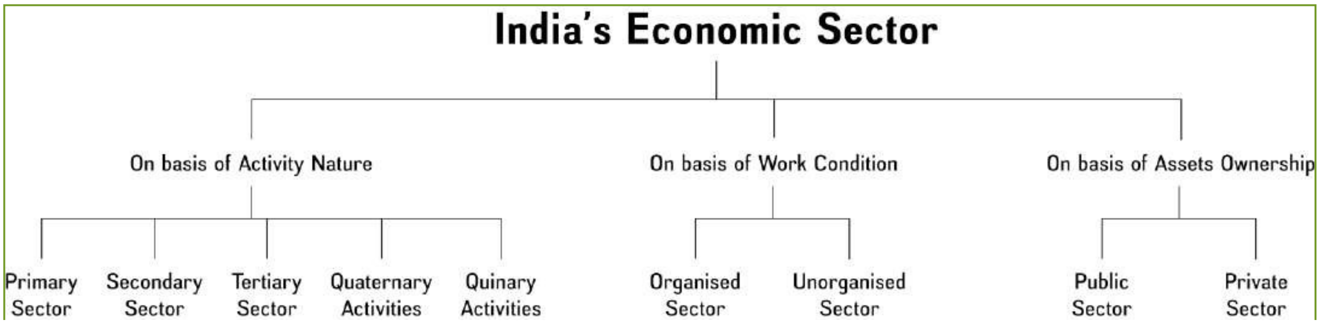

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

अर्थव्यवस्था की आर्थिक गतिविधियों के आधार पर इसे तीन भागों में बांटा गया है:-

<table>
<tr><td>प्राथमिक क्षेत्र</td><td colspan="2">• इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्राकृतिक क्षेत्रों का लेखांकन किया जाता है और इसके अंतर्गत निम्न क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जैसे -
▪ कृषि वानिकी
▪ मत्स्यन (मछली पकड़ना)
▪ खनन (ऊर्ध्वाधर खुदाई एवं उत्खनन (क्षैतिक खुदाई)
• प्राथमिक गतिविधियों में लगे लोगों को उनके काम की बाहरी प्रकृति के आधार पर रेड-कॉलर कार्यकर्ता कहा जाता है।</td></tr>
<tr><td>द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण)</td><td colspan="2">• अर्थव्यवस्था का वह क्षेत्र जो प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को अपनी गतिविधियों में कच्चे माल (Raw Material) की तरह उपयोग करता है। इस क्षेत्रक के अंतर्गत मुख्यतः अर्थव्यवस्था की विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन का लेखांकन किया जाता है। यह प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को एक नए उत्पाद के रूप में तैयार करता है।
• द्वितीयक क्षेत्र गतिविधियों में लगे लोगों को ब्लू कॉलर कार्यकर्ता कहा जाता है।</td></tr>
<tr><td rowspan="3">तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र)</td><td colspan="2">• यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था के प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र को अपनी उपयोगी सेवा प्रदान करता है। तृतीयक क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों से माल का उत्पादन नहीं होता, लेकिन वे विनिर्माण की प्रक्रिया और उपभोक्ताओं तक पहुंचने में सहायता प्रदान करती हैं।
• इस क्षेत्र की गतिविधियों को व्हाइट कॉलर कहा जाता है।
• पिंक कॉलर कार्यकर्ता वह होते है जिसे पारंपरिक रूप से महिलाओं का काम माने जाने वाले काम के लिए रखा जाता है। जैसे बेबी सिटर, फूलवाला, डे केयर वर्कर, नर्स आदि।
• इस क्षेत्र में उन सभी आर्थिक गतिविधियों को शामिल किया गया है जहाँ विभिन्न 'सेवाओं' का उत्पादन किया जाता है। जैसे खुदरा क्षेत्र, पर्यटन, बैंकिंग, चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ आदि ।</td></tr>
<tr><td>चतुर्धातुक क्षेत्र (Quaternary Activities): (ज्ञान आधारित)</td><td>• चतुर्धातुक क्षेत्र अर्थव्यवस्था के ज्ञान-आधारित भाग का वर्णन करता है, जिसमें आमतौर पर सूचना-प्रौद्योगिकी जैसे ज्ञान-उन्मुख आर्थिक क्षेत्र को शामिल किया गया है।
• चतुर्धातुक क्षेत्र अर्थव्यवस्था का बौद्धिक पहलू है। यह ऐसी प्रक्रिया है जो उद्यमियों को अर्थव्यवस्था में दी जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता को नया करने और सुधारने में सक्षम बनाती है।</td></tr>
<tr><td>क्रिया संबंधी गतिविधियाँ</td><td>• इस श्रेणी को 'गोल्ड कॉलर' व्यवसायों क रूप म संदभित किया जाता है , वे तृतीयक क्षेत्र के एक और उपखंड का प्रतिनिधित्व करते</td></tr>
</table>

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

INDEX

Sr.	CHAPTER	Pg. No
1	पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी तंत्र और पारिस्थितिकी तंत्र के प्रकार्य:	1
2	स्थलीय पारितंत्र	11
3	जलीय पारितंत्र	18
4	जैव विविधता	27
5	जैव विविधता की ुरक्षा हेतु ंरक्षित क्षेत्र	39
6	प्रदषण तथा इसका स्वास्थ्य पर प्रभाव	51
7	पर्यावरणीय कानून एवं नीतियाँ	66
8	भारत में पर्यावरणीय ंस्थाएँ	74
9	भारतीय वन्यजीव ंरक्षण हेतु प्रयास	77
10	ंरक्षण के उपाय	84
11	पर्यावरणीय सम्मेलन	89
12	जलवायु परिवर्तन: शमन हेतु रणनीतियाँ	109
13	जलवायु परिवर्तन से ंबंधित ंगठन	118
14	जलवायु परिवर्तन और भारत	123

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

1. पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी तंत्र और पारिस्थितिकी तंत्र के प्रकार्य:

परिभाषाएं

- **पर्यावरण:** जैविक तथा अजैविक घटकों से निर्मित प्राकृतिक परिदृश्य को पर्यावरण कहा जाता है।
- **पारिस्थितिकी:** जैविक व भौतिक(अजैविक) वातावरण के बीच उनके अंतर्संबंधों के अध्ययन को पारिस्थितिकी कहा जाता है।
- **जैवमंडल:** पृथ्वी के **जैविक घटक** को जैवमंडल कहते हैं,जिसमें **स्थलमंडल**, **जलमंडल** और **वायुमंडल** सम्मिलित होते हैं।
- **आवास:** आवास एक ऐसा स्थान होता है जिसमें वे सभी परिस्थितियाँ उपलब्ध होती हैं जो किसी जीव के जीवित रहने के लिए आवश्यक होता है।**(सभी आवास पर्यावरण है,किंतु सभी पर्यावरण आवास नहीं है।)**
- **पारिस्थितिकी तंत्र:** किसी जैवमंडल के जैविक घटकों तथा अजैविक घटकों के अंतर्संबंधों से निर्मित संरचनात्मक और क्रियात्मक इकाई को पारिस्थितिकी तंत्र कहा जाता है।
- **संक्रमिका:** दो या दो से अधिक समुदायों के मध्य संक्रमण क्षेत्र को संक्रमिका कहा जाता है। जैसे,मैंग्रोव समुद्री और स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के बीच की एक संक्रमिका(इकोटोन)है।
- **निकेत:** निकेत किसी जीव की पारिस्थितिकी तंत्र में उसके स्थान तथा उसकी कार्यात्मक भूमिका को बताता है।वस्तुतः निकेत का संबंध एक ऐसे क्रियात्मक क्षेत्र से है,जहाँ न केवल प्रजाति रहते हैं बल्कि वे अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आसपास के वातावरण से अंतर्संबंधित हो कर अन्तः क्रिया करते हैं।प्रत्येक प्रजाति का एक विशिष्ट निकेत होता है तथा कोई भी दो प्रजातियां एक ही निकेत में नहीं रह सकती हैं।
- निकेत के विभिन्न प्रकार: आवास निकेत,खाद्यान्न निकेत,भौतिक और रासायनिक निकेत।
- **बायोम:** बायोम पौधों व प्राणियों का एक समुदाय है जो एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में पाया जाता है।एक बायोम के अंतर्गत सभी पादपों तथा प्राणियों की विशेषताएँ समान होती हैं।बायोम आवास की तुलना में एक व्यापक अवधारणा है;एक बायोम में कई प्रकार के आवास हो सकते हैं।

> एक पूर्ण विकसित संक्रमिका(इकोटोन) में कुछ ऐसे जीव पाये जाते हैं जो आस-पास के समुदायों से **पूरी तरह अलग** होते हैं।जब प्रजातियों की विविधता किसी संक्रमिका में अधिक होती है,तो इसे **कोर प्रभाव(एज इफ़ेक्ट)** कहा जाता है। जैसे-पक्षियों की विविधता वन और रेगिस्तान के बीच के इकोटोन में अधिक होती है।

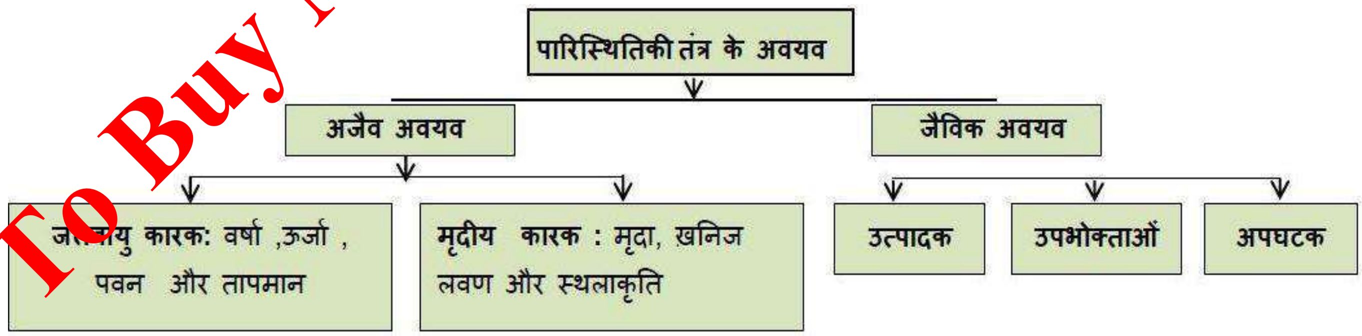

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956 This is a Sample pdf

प्रमुख अजैविक घटक

अजैविक घटक पर्यावरण के आकर और स्वरूप को निर्धारित करता है।जैसे एक स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में तापमान,प्रकाश और ल अजैविक कारक के रूप में सम्मलित होते हैं तो वहीं एक समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र में लवणता,महासागरीय धाराएँ आदि अजैविक कारक के रूप में सम्मलित होते हैं।

तापमान:

- तापमान जीवों के उपापचयी क्रिया,वृद्धि,अनुक्रिया तथा जीवों के अन्य शारीरिक कार्यों को निर्धारित करता है।
- किसी जीव का भौगोलिक वितरण उसके तापमान सहनशीलता के स्तर पर निर्धारित होता है।
- **ृथुता ी(यूरीथर्मल):** ऐसे जीव तापमान के एक व्यापक परास के प्रति अनुकूलन में सक्षम होते हैं।
- **तनुता ी(स्टेनोथर्मल):** ऐसे जीव जो तापमान की संकीर्ण सीमा या कम परास तक ही अनुकूलन में सक्षम होते हैं।

जल

- पादपों के भौगोलिक वितरण और उत्पादकता के निर्धारण में ल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **ृथुलवणी(यूरीहैलाइन):** ऐसे जीव लवणता के एक व्यापक परास के प्रति अनुकूलन में सक्षम होते हैं। (लवण सांद्रता:प्रति हजार भाग में उपस्थित लवणता के रूप में मापी जाती (‰))
- **तनुलवणी(स्टेनोहैलाइन):** ऐसे जीव जो लवणता की संकीर्ण सीमा या कम परास तक ही अनुकूलन में सक्षम होते हैं।
- परासरणी समस्याओं(osmotic problems) के कारण अलवणीय ल के कुछ जीव समुद्री ल में तथा समुद्री जीव अलवणीय ल में लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकते हैं।

प्रकाश

- **पौधों के लिए:** प्रकाश संश्लेषण
- **प्राणियों के लिए:**प्राणियों की वृद्धि, प्रजनन और प्रवासी गतिविधियों को निर्धारित करता है। पराबैंगनी विकिरण कई जीवों के लिए हानिकारक होता है।
- दृश्य प्रकाश के सभी घटक समुद्र के विभिन्न गहराई में रहने वाले समुद्री जीवों के लिए उपलब्ध नहीं होते हैं। इसलिए प्रकाश की उपलब्धता में अंतर के कारण ही लाल,हरा व भूरा शैवाल समुद्र की अलग-अलग गहराई में पाये जाते हैं।

मृदा:

- किसी भी क्षेत्र में वनस्पति का निर्धारण मृदा संरचना,जलधारण क्षमता इत्यादि के आधार पर होता है।
- मृदा की संरचना, PH-मान, खनिज तत्वों,स्थलाकृति इत्यादि पर निर्भर करती है।

अजैविक कारकों के प्रति प्रतिक्रिया:

चरम वातावरण में रहने वाले जीव तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना या प्रबंधन कैसे करते हैं?

विनियमन (Regulate)

- शरीर के तापमान को स्थिर बनाये रखना(शारिरिक अनुकूलन या कभी-कभी व्यवहारात्मक अनुकूलन द्वारा) तथा समस्थिति(आंतरिक शरीर की स्थिरता बनाए रखना) बनाये रखना। जैसे-गर्मियों में बाहरी तापमान हमारे शरीर के तापमान से अधिक होता है,तो हम पसीना बहाकर शरीर को अनुकूलित करते हैं।

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

विषय - सूची

क्रम.	अध्याय	पृष्ट सं.
1	पृथ्वी की उत्पति	1
2	भू-आकृति विज्ञान	16
3	वायुमंडल की सरंचना और संघटन	41
4	वायुमंडलीय दाब और वायु संचरण	47
5	वायुमंडलीय जल	56
6	विश्व जलवायु प्रदेश	63
7	समुन्द्री विज्ञान	72
8	भारतीय जलवायु	88
9	अपवाह तंत्र और प्रतिरूप	103
10	मृदा	116
11	प्राकृतिक वनस्पतियाँ	122
12	मानव बस्ती	129
13	भारत - जनसंख्या	131
14	भारत -भूमि संसाधन	136
15	कृषि	138
16	उद्योग	143
17	जल संसाधन	146
18	खनिज संसाधन	148
19	परिवहन और संचार	151
20	महाद्वीप	155

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956 This is a Sample pdf

अध्याय-1. पृथ्वी की उत्पत्ति

प्रारंभिक सिद्धांत

सिद्धांत	द्वारा	विवरण
नीहारिका परिकल्पना	• जर्मन दार्शनिक इमैनुअल कैंट द्वारा। • गणितज्ञ लाप्लास ने इसे 1796 में संशोधित किया।	• इस परिकल्पना के अनुसार ग्रहों का निर्माण धीमी गति से परिभ्रमण करने वाले पदार्थों के बादल से हुआ जो कि सूर्य से संबद्ध था।
	• 1950 में पुनः रूस के ओटो श्मिट और जर्मनी के कार्ल वीज़स्कर द्वारा संशोधित किया गया।	• उनके विचार से सूर्य, सौर निहारिका से घिरा हुआ था जो मुख्यतः हाइड्रोजन, हीलियम और धूल कणों की बनी थी। • इन कणों के घर्षण व टकराने से एक चपटी तश्तरी की आकृति के बादल का निर्माण हुआ और अभिवृत्ति प्रक्रम द्वारा ग्रहों का निर्माण हुआ।
ग्रहाणु परिकल्पना	• 1900, में चेम्बरलेन और मौलटन द्वारा प्रतिपादित • समर्थन- सर जेम्स जीन्स और बाद में सर हेरोल्ड जेफरी	• ब्रह्मांड में एक भ्रमणशील तारा सूर्य के नज़दीक से गुजरा। • इसके परिणाम स्वरूप सूर्य सतह से सिगार के आकार का एक पदार्थ निकल कर अलग हो गया। • यह तारा जब सूर्य से दूर चला गया तो सूर्य सतह से बाहर निकला हुआ यह पदार्थ सूर्य के चारों तरफ घूमने लगा और यही धीरे-धीरे संघनित होकर ग्रहों के रूप में परिवर्तित हो गया।

आधुनिक सिद्धांत:

बिग बैंग थ्योरी:

- जिसे विस्तारित निहारिका परिकल्पना भी कहा जाता है।
- इस सिद्धांत को 1920 के दशक के अंत में जॉर्ज हेनरी लेमैत्रे द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
- **एडविन हबल**→ 1920 में एडविन हबल द्वारा साक्ष्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें कहा गया, कि यह ब्रह्माण्ड निरंतर विस्तारित हो रहा है।

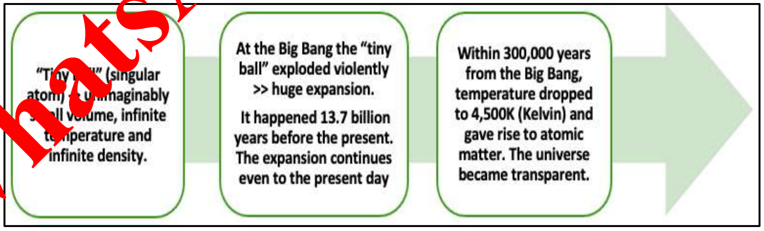

- ब्रह्मांड के विस्तार का मतलब आकाशगंगाओं के बीच अंतरिक्ष में वृद्धि है।
- जैसे-जैसे समय बीतता गया, आकाशगंगाएँ और दूर होती गई। बिग बैंग थ्योरी में ब्रह्मांड के विकास के निम्नलिखित चरणों पर विचार किया गया है:

तारों का निर्माण:

- आरंभिक ब्रह्मांड में ऊर्जा व पदार्थ का वितरण समान नहीं था, घनत्व में आरंभिक भिन्नता से गुरुत्वाकर्षण बलों में भिन्नता आई, जिसके परिणामस्वरूप पदार्थ का एकत्रण हुआ।
- यही एकत्रण आकाशगंगाओ के विकास का आधार बना। आकाशगंगा असंख्य तारों का एक समूह है।
- एक आकाशगंगा के निर्माण की शुरुआत हाइड्रोजन गैस से बने विशाल बादल के संचयन से होती है जिसे नीहारिका(nebula) कहा गया।
- इसी वृद्धि कर रही नीहारिका में गैस के एकत्रण विकसित हुए।
- ये बढ़ते हुए सघन गैसीय पिंड बने जिन से तारों का निर्माण आरंभ हुआ।

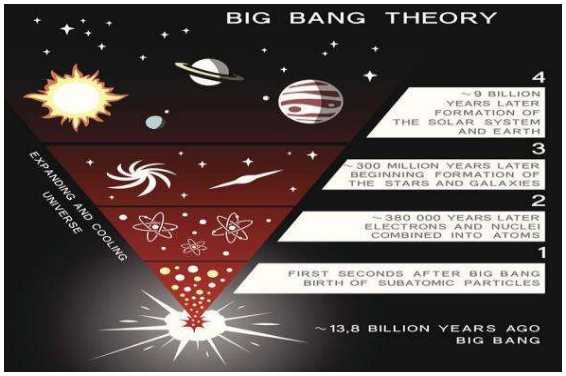

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

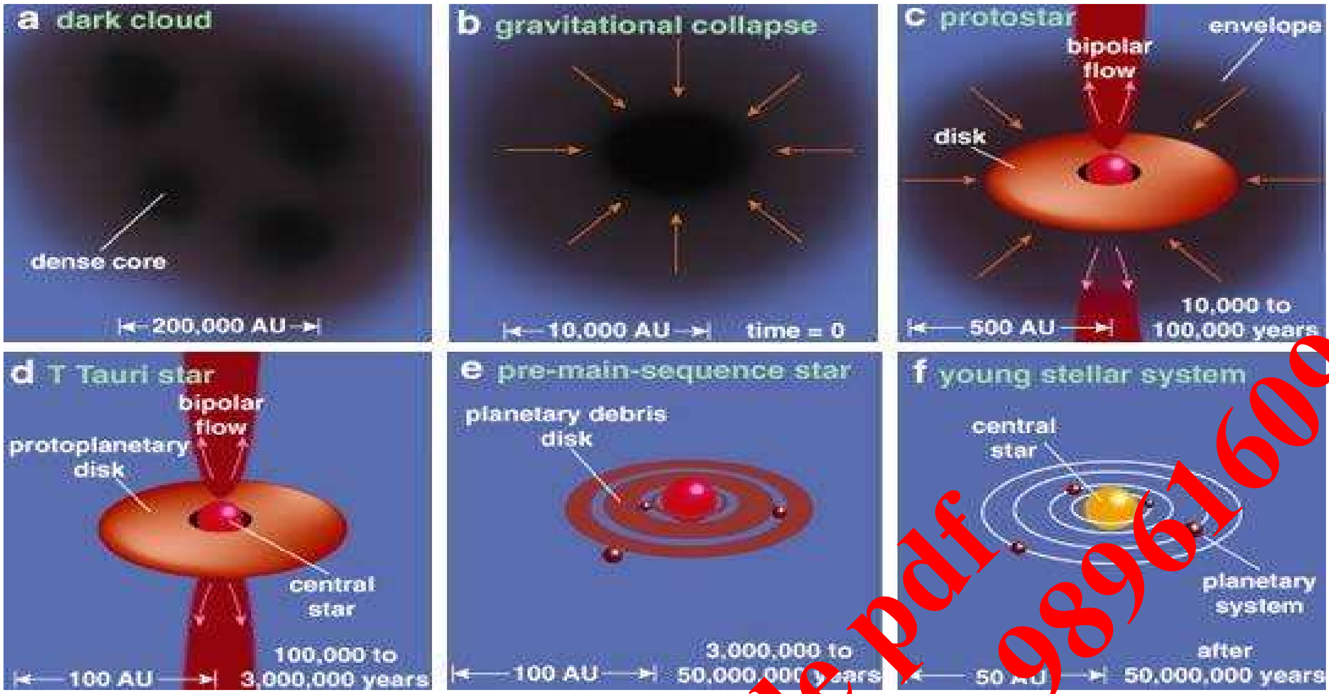

ग्रहों का निर्माण:

- तारे नीहारिका के अंदर, गैस के गुन्थित झुंड है। इन गुन्थित झुंडो के गुरूत्वाकर्षण बल से गैसीय बादल में केंद्र का निर्माण हुआ और इस केंद्र के चारों तरफ गैस व धूल कणों की घूमती हुई तश्करी विकसित हुई।
- अगली अवस्था में गैसीय बादल का संघनन आरंभ हुआ और केंद्र के चारों ओर का पदार्थ, छोटे गोलों के रूप में विकसित हुआ। ये छोटे गोले, संसंजन प्रक्रिया द्वारा ग्रहणुओं में विकसित हुए। संसंजन की क्रिया द्वारा पिंड बनने शुरू हुए और गुरुत्वाकर्षण बल के परिणामस्वरूप ये आपस में जुड़ गए। छोटे पिंडों की अधिक संख्या ही ग्रहाणु बनाती है।
- अंतिम अवस्था में अनेक छोटे ग्रहाणुओ के सहवर्धित होने पर कुछ बड़े पिंडो का निर्माण ,ग्रहों के रूप में हुआ।

सौर मंडल:

हमारे सौरमंडल में सूर्य , 8 ग्रह, 63 उपग्रह , लाखों छोटे पिंड जैसे - क्षुद्रग्रह ,धूमकेतु एवं वृहत् मात्रा में धूलकण व गैस है।

- सूर्य हमारे सौर मंडल का केंद्रीय तारा है। हमारे सौर मंडल में आठ ग्रह हैं: बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून
  बुध, सूर्य के निकटतम और सबसे छोटा ग्रह है।*(My Very Mother Just Served Us Nuts)*
- **शुक्र** को पृथ्वी की बहन 'के नाम से जाना जाता है ,क्योंकि इसका आकार पृथ्वी से बहुत मिलता-जुलता है। यह सबसे गर्म ग्रह है क्योंकि इसके वायुमंडल में सल्फ्यूरिक एसिड के बादलों के साथ *90-95%* कार्बन डाइऑक्साइड होता है।

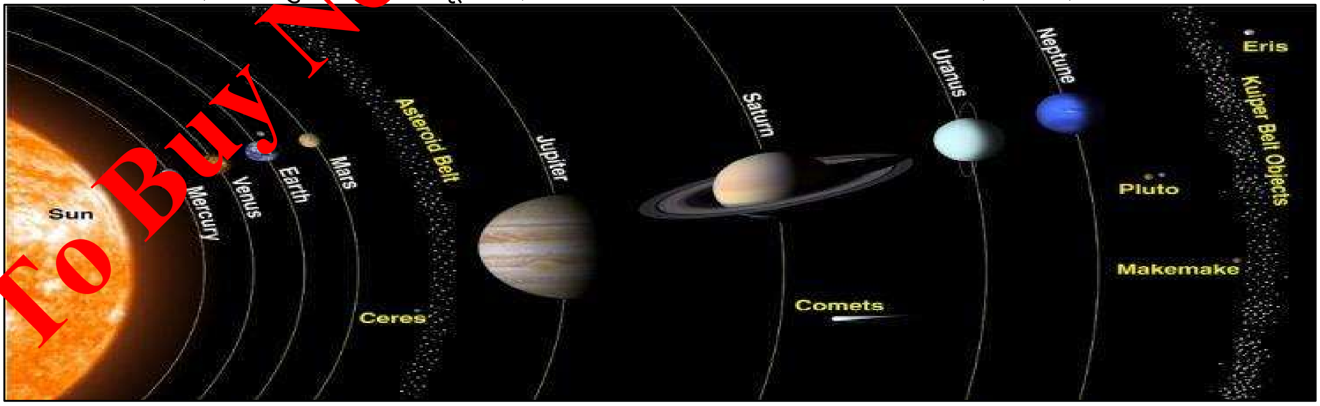

- सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है- इसके वायुमंडल में हाइड्रोजन, हीलियम, मीथेन और अमोनिया हैं।

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956 This is a Sample pdf

विषय -सूची

Sr.	CHAPTER	Pg. No
1	पूर्व मध्यकाल (600ई.-1200ई.)	2
2	दिल्ली सल्तनत (1206ई.-1526ई.)	10
3	क्षेत्रीय राज्य	22
4	विजयनगर साम्राज्य (1336ई. -1646 ई.)	25
5	बहमनी साम्राज्य (1347ई.- 1525 ई.)	29
6	भक्ति और सूफी आन्दोलन	32
7	मुगल काल (1526-40 एवं 1555-1857)	41
8	मराठा साम्राज्य (1674-1720) एवं मराठा संघ (1720-1818)	52

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

Test Series Schedule

www.studymasterofficial.com

Right road takes you to your destination

same way

Right study material takes you to success

सही रास्ता आपको आपकी मंजिल तक ले जाता है

इसी तरह

सही अध्ययन सामग्री आपको सफलता की ओर ले जाती है

WhatsApp (9896160956) for Samples of Study Material, Special Notes, Question Bank, NCERT Gist Books and Test Series.

A complete & Targeted Test Series for HCS 2023

Total Test = 25

(Download or Get 1st Test Free)

1 – 10 Basic Subject Wise Test (100 question each test)

11 – 15 Advanced Subject Wise Test (100 question each test)

16 – 25 Complete Syllabus Test (100 question each test)

Schedule and Syllabus of Test Series 2023

Test Number	*Date*	*Test Subject*	*Syllabus*	*Remarks (if any)*
1.	1 March 2023	Complete Syllabus Test	Complete Syllabus	Demo Test
2.	3 March 2023	Ancient History	Ancient History	
3.	5 March 2023	Medieval History	Medieval History	

STUDY MASTER OFFICIAL Visit our official website for more pdf www.studymasterofficial.com

Test Series Schedule

www.studymasterofficial.com

4.	7 March 2023	Modern History	Modern History	
5.	9 March 2023	Geography	Complete Geography	
6.	11 March 2023	Polity	Polity	
7.	13 March 2023	Economy	Economy	
8.	15 March 2023	Science	Biology, Physic, Chemistry	
9.	17 March 2023	Ancient History	Ancient History & Culture	
10.	19 March 2023	Geography	Complete Geography	
11.	21 March 2023	Economy	Complete Economy	
12.	23 March 2023	Polity	Complete Polity	
13.	25 March 2023	History	Complete History	
14.	27 March 2023	Geography	Complete Geography	
15.	29 March 2023	Science	Complete Science	
Revision	**Revision**	**Revision**	**Revision**	**Revision**
16.	1 April 2023	Complete Syllabus Test - 2	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
17.	4 April 2023	Complete Syllabus Test - 3	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
18.	8 April 2023	Complete Syllabus Test - 4	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
19.	11 April 2023	Complete Syllabus Test - 5	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
20.	15 April 2023	Complete Syllabus Test - 6	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
21.	18 April 2023	Complete Syllabus Test - 7	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	

STUDY MASTER OFFICIAL Visit our official website for more pdf www.studymasterofficial.com

This is Paid pdf of Study Master Official, for more details contact us. Copyright@studymaster
Paid Study Material, Question Bank &HCS Test Series, Special Notes Contact WhatsApp 9896160956

Test Series Schedule

www.studymasterofficial.com

22.	22 April 2023	Complete Syllabus Test -8	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
23.	25 April 2023	Complete Syllabus Test -9	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
24.	29 April 2023	Complete Syllabus Test -10	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	
25.	30 April 2023	Complete Syllabus Test -11	Complete Syllabus + Current Affairs + HR GK	

STUDY MASTER
LEARN WHILE ENJOYING

Previous Test Series Results and Details

Test Series 2016: Total Test 10 – **23 Question asked direct in Exam from Test Series**

Test Series 2019: Total Test 25 – **68 Question asked direct in Exam from Test Series**

Test Series 2021: Total Test 35 – **38 Question asked direct/indirect in Exam from Test Series**

Test Series 2021(Re-Exam): Total Test 35 – **19 Question asked direct in Exam from Test Series**

Test Series 2023: Total Test 25 – We are going to cover maximum questions from our Test Series in this exam.

STUDY MASTER OFFICIAL Visit our official website for more pdf www.studymasterofficial.com

Test Series Schedule

www.studymasterofficial.com

Hope for the Best & Good Luck for the Exam.

WhatsApp (9896160956) for Samples of Study Material, Special Notes, Question Bank, NCERT Gist Books and Test Series.

Other Course Details for HCS 2023

1. Study Material available in Hindi & English Medium. (Get free Samples Now)

2. Question Bank available in bilingual medium same as exam. (Get free Samples Now)

3. NCERT Gist Books available in bilingual medium. (Get free Samples Now)

4. Test Series available in bilingual medium same as exam. (Get free Samples Now)

5.Video Courses (Subject wise)

6.Complete GK/GS Booster for HCS 2023 Bilingual Course. (Watch demo lectures on Application – Study Master Official)

WhatsApp (9896160956) for Samples of Study Material, Special Notes, Question Bank NCERT Gist Books and Test Series.

STUDY MASTER
LEARN WHILE ENJOYING

Our Question Bank for prelims contains 23000 questions in bilingual medium and it covered 74 questions in HCS Prelims 2019, 79 Questions in HCS Prelims 2021 and 77 Questions in HCS Prelims 2021 (Re Exam.)

Thanks, and Good Luck for Your Exam.

Team Study Master Official

Helpline/WhatsApp: 9896160956

STUDY MASTER OFFICIAL Visit our official website for more pdf www.studymasterofficial.com

Test Series Schedule

www.studymasterofficial.com

STUDY MASTER
LEARN WHILE ENJOYING

STUDY MASTER OFFICIAL Visit our official website for more pdf www.studymasterofficial.com

1.पूर्व मध्यकाल (600ई.-1200ई.)

1. उत्तरी भारत: राजपूताना काल

हर्षवर्धन के बाद, राजपूत उत्तर भारत में एक मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरे और 7वीं सदी के बाद से लगभग 500 वर्षों तक भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर राज किया।

त्रिपक्षीय संघर्ष (750ई.-100ई.)

- *750*ई.-1000ई. का काल तीन महत्वपूर्ण साम्राज्यों के उत्कर्ष का काल था: गुर्जर-प्रतिहार (पश्चिमी भारत), पाल (पूर्वी भारत) और राष्ट्रकूट (दक्कन)।
- इन्हीं तीन साम्राज्यों के बीच के संघर्ष को (मूल रूप से गंगा घाटी में स्थित कन्नौज क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए) समान्यतः "**त्रिपक्षीय संघर्ष**" के रूप में जाना जाता है।
- **कन्नौज** रणनीतिक और वाणिज्यिक रूप से महत्वपूर्ण था। यह**गंगा के व्यापार मार्ग में स्थित होने के साथ-साथ सिल्क मार्ग** को भी जोड़ता था। पूर्व में,कन्नौजहर्षवर्धनके साम्राज्य की राजधानी भी था।

गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य (पश्चिमी भारत) 730ई.-1036ई.

- इन्हें गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना जाता था| ये मूलतः **पशुपालक और योद्धा** थे।
- इस साम्राज्य की स्थापना **हरिश्चन्द्र** द्वारा दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में जोधपुर और उसके आस-पास के इलाके में की गयी थी।
- प्रतिहार, सिंधु नदी के पूर्व में अरब सेनाओं को बढ़ने से रोकने में सफल रहे।
- गुर्जर-प्रतिहार अपनी मूर्तियों, नक्काशीदार और खुले मंडप शैली के मंदिरों के लिए जाने जाते हैं। मंदिर निर्माण की उनकी शैली का सबसे बड़ा उदाहरण **खजुराहो के मंदिर** हैं, जिसे कि **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल**में भी शामिल किया गया हैं।
- संस्कृत के प्रसिद्ध कवि और नाटककार **राजशेखर** को महेन्द्रपाल प्रथम (मिहिरभोज का पुत्र)कासंरक्षण प्राप्त था।
- महेन्द्रपाल प्रथम (886-910ई.) के बाद महिपाल प्रथम गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य का शासक बना।
- प्रतिहार साम्राज्य की यात्रा करने वाला **अल-मसूदी**बगदाद से आया था।

प्रमुख शासक:

नागभट्ट प्रथम (730-760ई.)	• सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार शासक, जिसे **"अरबों का नाशक"** भी कहा जाता है। • इनको राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने पराजित किया था।
वत्सराज (780-800ई.)	• पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कन्नौज को अपनी राजधानी बनायी।

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

	• इसकी **विस्तारवादी नीति** के कारण इसका पाल शासक धर्मपाल और राष्ट्रकूट शासक **ध्रुव** के साथ सामना हुआ, इसप्रकार **"त्रिपक्षीय संघर्ष"** की शुरुआत हुई जो लगभग 350 वर्षों तक चला। • वत्सराज ने कन्नौज पर नियंत्रण स्थापित करने के क्रम में पाल शासक धर्मपाल और राष्ट्रकूट शासक दंतिदुर्ग को पराजित किया।
नागभट्ट द्वितीय (805-833ई.)	• इसने **कन्नौज**औरसिंधु-गंगा के मैदान पर अधिकार करने के साथ-साथ पाल शासकों से बिहार को जीता और पश्चिम में मुस्लिम आक्रमण का भी सामना किया। • इसने **गुजरात में सोमनाथ शिव मंदिर का पुनर्निर्माण** भी करवाया, जो सिंध से किए गए अरब आक्रमण से क्षतिग्रस्त हो गया था।
भोज प्रथम/मिहिरभोज (836-885ई.)	• प्रतिहार वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक, पाल और राष्ट्रकूट दोनों शासकों को पराजित किया। • इसने अपने राजधानी कन्नौज में ही बनाई जिसे **महोदया** के नाम से भी जाना जाता है। • यह विष्णु का उपासक था और इसने '**आदिवाराह**'की उपाधि धारण की थी।

गज़नवी के आक्रमण के बाद प्रतिहारों का शासन समाप्त हो गया और उनके क्षेत्रों को राजपूताना के चौहानों, गुजरात के चालुक्य या सोलंकी और मालवा के परमार शासकों द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया।

बंगाल के पाल शासक: 750ई.-1150ई.

- पाल साम्राज्य की स्थापना 750ई. में **गोपाल** ने की थी।
- **राजधानी:** मुद्दागिरी/ मुंगेर (बिहार)
- पाल साम्राज्य **बंगाल और बिहार** में फैला था, जिसके अंतर्गत पाटलिपुत्र,विक्रमशिला, मुंगेर ताम्रलीप्ति जैसे प्रसिद्ध नगर आते थे।
- पाल बौद्ध धर्म के **महायान और तांत्रिक संप्रदाय** के अनुयाई थे।
- पाल शासकों के **तिब्बत के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध** थे। प्रख्यात बौद्ध विद्वानों संतरक्षिता और दीपांकर को तिब्बत में आमंत्रित किया गया था, उन्होंने वहां धर्म का एक नया रूप प्रस्तुत किया।
- इनके दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ घनिष्ठ **व्यापारिक** और **सांस्कृतिक** संबंध थे।
- मलय, जावा, सुमात्रा पर शासन करने वाले शैलेंद्र राजवंश (बौद्ध) ने कई राजदूतों को पाल दरबार में भेजाथा।
- पाल युग को **बंगाल के इतिहास का स्वर्ण युग** कहा जाता है।
- पाल सेना अपनी **विशाल हाथी सेना** के लिए प्रसिद्ध थी।
- अरब व्यापारी **सुलेमान** ने पाल साम्राज्य का दौरा किया था।
- पाल साम्राज्य का अंत सेन शासक विजयसेन द्वारा की गयी।

प्रमुख शासक

गोपाल (750ई. के आसपास)	• धर्मपाल के खलिमपुर ताम्र लेख के अनुसार, इसने मगध के उत्तर गुप्त शासकों और खड्ग वंशके शासकों को हराकर **पाल राजवंश** की शुरुआत की थी।

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

विषय-सूची

क्रम.	अध्याय	पृष्ट सं.
1	यूरोपियों के आगमन के समय भारत	1
2	भारत में अंग्रेज़ी सत्ता का एकीकरण तथा विस्तार	7
3	1857 से पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जन-असंतोष	14
4	1857 का विद्रोह	2[illegible]
5	सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन	25
6	स्वतंत्रता संघर्ष का आरंभ	31
7	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसः स्थापना एवं उदारवादी चरण **(1885- 1905)**	33
8	उग्र-राष्ट्रवाद का युग *(1905-1918)*	38
9	क्रांतिकारी गतिविधियाँ (1907-17)	42
10	प्रथम विश्व युद्ध (1914-1919) और राष्ट्रवादी प्रत्युत्तर	45
11	खिलाफत एवं असहयोग अन्दोलन	50
12	सविनय अवज्ञा आन्दोलन ***(1930-31)*** तथा गोलमेज सम्मेलन	52
13	स्वराजी, समाजवादी विचारों एवं नवीन शक्तियों का उदय	57
14	राष्ट्रीय आंदोलन: स्वतंत्रता और विभाजन की ओर (1939-47)	62
15	भारत में ब्रिटिश नीतियों का सर्वेक्षण	72
16	ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव	74
17	कामगार वर्ग का आंदोलन	76
18	संविधानिक, प्रशासनिक और न्यायिक विकास	78
19	प्रेस का विकास	86
20	शिक्षा का विकास	90
21	महत्वपूर्ण ब्रिटिश समितियाँ व आयोग	94
22	विशिष्ट आंदोलनों से संबंधित व्यक्तित्व	96
23	गवर्नर जनरल: योगदान तथा महत्त्व	103

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

1. यूरोपियों के आगमन के समय भारत

यूरोपियों के भारत में आगमन के लिए जिम्मेदार कारक :

- जहाज निर्माण तथा *नौ परिवहन* में *यूरोपियों की उन्नत* तकनीक।
- यूरोपियों *का आर्थिक विकास*।
- भारतीय *वस्तुओं जैसे मसाले*, छींट, रेशम, *विभिन्न प्रकार के कीमती पत्थर*, चीनी *मिट्टी के बर्तनों इत्यादि की* यूरोप में बढ़ती *मांग*।
- भारत की अकूत दौलत।

एशिया में यूरोपियों के विजय का कालखंड :
पुर्तगाली *(1498)* → अंग्रेज़ *(1600)* → डच *(1602)* → **फ्रांसीसी *(1664)***

पुर्तगाली

- **टॉरडेसिलस की संधि *(1494)*- पुर्तगाल तथा स्पेन** के बीच अटलांटिक में एक आभासी रेखा के द्वारा **पुर्तगाल के लिए पूर्व तथा स्पेन के लिए पश्चिम** में गैर ईसाई दुनिया को विभाजित किया गया।

वास्कोडिगामा	• वास्कोडिगामा *1498* में आशा *अंतरीप* द्वीप *होते हुए* कालीकट *पहुंचा तथा* उसका जमोरिन (कालीकट का राजा) के द्वारा *स्वागत किया गया*। • *1502* तक, वास्कोडिगामा की दुसरी यात्रा के दौरान कालीकट, कोचीन और कन्नूर में व्यापारिक केन्द्रों *की स्थापना की गई तथा* उनकी किलेबंदी *की गई*। • *अन्य व्यापारियों के विपरीत पुर्तगाली भारत में व्यापार का एकाधिकार चाहते थे*।
पेड्रो अल्वरेज़ कैब्रल	• ***1500* में, कालीकट में** सबसे पहले फैक्ट्री की स्थापना की। • भारतीय उपमहाद्वीप पर *यूरोपियों के शासन के युग की शुरुआत*।
फ्रांसिस्को डी अलमीडा *(1505-1509)*	• **भारत में *पहला पुर्तगाली गवर्नर जिसने* "शांत जल की (ब्लू वाटर) नीति" कार्टेज प्रणाली की शुरुआत की** - इसमें भारतीय भूमि पर किले बनाने के बजाय समुद्र में शक्तिशाली होने पर बल दिया गया था। • **कार्टेज प्रणाली :** हिंद महासागर *में पुर्तगालियों द्वारा जारी* जल परिवहन *लाइसेंस या पास*।
अलफांसो डी अलबुकर्क *(1509- 1515)*	• इसे **भारत में पुर्तगाली शक्ति का संस्थापक** माना जाता है ; इसने बीजापुर से गोवा को जीत लिया; मुस्लिमों पर अत्याचार; **विजयनगर के राजा श्री कृष्ण देव राय** *(1510)* से भटकल को जीत लिया; • भारत के *मूल निवासियों के साथ विवाह करने की नीति का आरंभ किया*। • इसके द्वारा *अपने प्रभाव क्षेत्र में **सती प्रथा पर प्रतिबंध** लगाया गया*। • *1515* में अल्बुकर्क की मृत्यु हो गयी तथा उस समय तक पुर्तगाली *भारत में सबसे मजबूत* नौ-सैनिक *शक्ति* के रूप में स्थापित हो चुके थे।
नीनू डा कुन्हा *(1529-38)*	• **इसके द्वारा *1503* में कोचीन की जगह गोवा को राजधानी बनाया गया।** इस प्रकार **भारत में पुर्तगाली *उपनिवेश की राजधानी गोवा बन गया*।** • उसके शासनकाल में, *दीव तथा* वसाई को गुजरात *के राजा बहादुर शाह से छीन* लिया *गया तथा उस पर* पुर्तगालियों *का कब्जा हो गया*। • *बहादुर शाह 1537* में दीव में पुर्तगालियों *से लड़ते हुए मारे गए*। • यह एक *व्यवहारिक नेता था जिसने पश्चिमी तटीय क्षेत्र से परे भी पुर्तगाली साम्राज्य का विस्तार किया*। उसके समय *में पुर्तगाली शक्ति का विस्तार पूर्वी तट तक हुआ*।

पुर्तगालियों की धार्मिक नीति: प्रारंभ में, सिर्फ मुस्लिमों के प्रति द्वेषपूर्ण, बाद में हिंदुओं के प्रति भी। *1579* में, *बादशाह अकबर को ईसाई धर्म में परिवर्तित कराने के लिए ईसाई मिशनरियों को भेजा गया*।

भारत मे पुर्तगालियों *के पतन के लिए जिम्मेदार कारक :*

- मिस्र, फारस *तथा उत्तरी भारत में शक्तिशाली राजवंशों का उदय तथा* उनके *पड़ोसियों के रूप में मराठाओं का उद्भव;*
- मिशनरियों *की गतिविधियों से राजनीतिक भय तथा* उत्पीड़न (जैसे न्यायिक जांच) से घृणा उत्पन्न हुई *जो पुर्तगाली आध्यात्मिक दबाव* के *खिलाफ प्रतिक्रिया का कारण बनी;*
- पुर्तगाली प्रभुता को चुनौती देने वाली अंग्रेज़ी तथा डच वाणिज्यिक संस्थाओं का उदय;

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

- भारत में पुर्तगाली शासन की समुद्री डकैती तथा अवैध व्यापार *प्रथाओं के साथ बड़े विस्तृत पैमाने पर* भ्रष्टाचार *लालच एवं स्वार्थ;*
- ब्राज़ील की खोज के कारण पुर्तगाली *उपनिवेशों का पश्चिम की ओर* पलायन।

पुर्तगालियों *के आगमन का महत्व :*

- पुर्तगालियों *ने न केवल* **यूरोपीय *युग*** *की शुरुआत की बल्कि* **नौसैनिक *शक्ति के उदय*** *को भी चिन्हित किया।*
- **जहाज पर तोप के उपयोग की शुरुआत**।
- पुर्तगाली *समुद्र में उन्नत तकनीकों में माहिर थे।* उन्होंने बहुत बड़ी मात्रा में एक से अधिक डेक वाले जहाजों का निर्माण किया।
- मिशनरियों *तथा चर्च भी* भारत *में चित्रकारों,* नक्काशी *करने वालों तथा मूर्ति बनाने वालों के संरक्षक थे।*
- पुर्तगाली **संगठन बनाने में कुशल** थे —जैसे शाही शस्त्रागार और जहाज बनाने के स्थान का निर्माण तथा पायलटों की नियमित प्रणाली का रखरखाव तथा मानचित्रण तथा निजी व्यापारिक जहाजों पर अंकुश लगाने *के लिए* राज्य बलों को खड़ा करना — आदि अधिक उल्लेखनीय हैं।
- **इन्होंने युद्ध की यूरोपीय कला की शुरुआत की** ।
- गोआ में **चांदी के काम करने वाले तथा सोने के काम करने वाले सुनार** की कला का विकास।

नोट : पुर्तगाली भारत *में सबसे पहले* आये *तथा* भारत से *सबसे अंत में* गए।

डच (नीदरलैंडवासी)

- कॉर्नेलिस डी हॉटमैन पहला डच था जो *1596* में सुमात्रा और बेंटेन पहुंचा था।
- **डच संसद के एक चार्टर के द्वारा मार्च *1605* में यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई थी,** इन्हें युद्ध करने, संधियां करने तथा किले बनाने की शक्ति प्राप्त थी।
- आंध्र क्षेत्र में *1605* में **मसूलीपट्टम में पहले कारखाने की स्थापना** की गई।
- बाद में वे पुर्तगालियों को हराकर यूरोपीय *व्यापारिक शक्ति के प्रमुख के रूप में उभरे।*
- **भारत में उनका प्रमुख केंद्र पुलिकट था,** जिसे बाद में नेगापट्टनम में स्थापित किया गया।
- डच यमुना घाटी तथा मध्य भारत में उत्पादित नील (इंडिगो), बंगाल गुजरात तथा कोरोमंडल क्षेत्र से उत्पादित वस्त्र तथा रेशम, बिहार से शोरा, और गंगा की घाटी से उत्पादित अफीम एवं चावल का व्यापार करते थे।
- *1623* में, **अंग्रेजों *तथा* डचों *के बीच में एक संधि हुई*** — डचों ने भारत में तथा अंग्रेजों ने इंडोनेशिया में अपने अधिकार क्षेत्र के दावों को वापस ले लिया।
- *1650 (17*वीं शताब्दी*)*, अंग्रेज़ भारत में एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरने लगे।
- करीब *70* वर्षों तक *अंग्रेजों तथा डचों के बीच में लड़ाई जारी रही जिसमें डच एक-एक करके अपने* बस्तियों/*उपनिवेशों* को अंग्रेजों के हाथ खोते रहे।
- **डचों को** भारत में सा**म्राज्य स्थापित करने में कोई ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी**, वे सिर्फ *व्यापार करना चाहते थे। उनका मुख्य व्यावसायिक* **इंडोनेशिया *के स्पाइस दीप समूहों*** में था जहां से वे व्यापार के माध्यम से बड़ा लाभ अर्जित करते थे।
- **भारत में पतन - आंग्ल डच युद्धों** में डचों की हार एवं उनका ध्यान **मलय द्वीप समूहों** की ओर स्थानांतरित। **बेदरा के युद्ध *(1759)*** में अंग्रेजों के द्वारा डचों *को हराया गया।*
- लंबे *समय तक युद्ध के बाद दोनों पक्षों के द्वारा एक समझौता किया गया* जिसके *तहत अंग्रेजों* के द्वारा *इंडोनेशिया से अपने सभी दावों को वापस ले लिया तथा* डचों के द्वारा *भारत से अपने सभी दावों को वापस ले लिया* गया।

डचों के द्वारा : मसूलीपट्टनम (1605), पुलीकट (1610), सूरत (1616), विमलीपट्टनम (1641), करिकल (1645), चिनसूरः (1653), कासिमबाजार, बरानागोर, पटना, बालासोर, नेगापट्टनम (1658) और कोचीन (1663) में फैक्टरीयों की स्थापना की गई। इसमें पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों तट शामिल थे)

अंग्रेज़

31 दिसंबर, *1600* को, **इंग्लैंड *की महारानी एलिजाबेथ प्रथम*** *के द्वारा एक चार्टर जारी किया गया जिसमें 15 वर्षों*

के लिए व्यापार का एकाधिकार प्रदान किया गया। अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना *1600 में हुई* थी।

- *1609* में **इंग्लैंड से कैप्टन हॉकिंस** भारत में **मुगल बादशाह जहांगीर के शाही दरबार** में आया तथा उसने सूरत में एक अंग्रेजी व्यापार केंद्र की स्थापना करने की इजाजत मांगी, लेकिन *पुर्तगालियों के दबाव के चलते जहांगीर ने उसे इजाजत देने से मना कर दिया।*
- **थॉमस बेस्ट के द्वारा पुर्तगालियों पर विजय प्राप्त करते ही सूरत में एक फैक्ट्री की स्थापना** की गई।
- **बाद में *1613* में, जहांगीर ने अंग्रेजों (सर् थॉमस रो) को एक फरमान (अनुमति पत्र) जारी करके** आगरा, अहमदाबाद और भड़ौच में उनके व्यापारिक केंद्रों को स्थापित करने की अनुमति दे दी, जिसके बाद अंग्रेजों ने ***1613* में सूरत में अपना**

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

विषयवस्तु

Sr.	अध्याय	Pg. No
1	जैव प्रौद्योगिकी	1
2	रक्षा	15
3	स्वास्थ्य	28
4	रोग	36
5	सूचना प्रौद्योगिकी	48
6	नैनो विज्ञान और नैनो प्रौद्योगिकी	63
7	अंतरिक्ष और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी	79

This is a Sample pdf
To Buy Notes WhatsApp on 9896160956

1. जैव प्रौद्योगिकी (बायोटेक्नोलोजी)

प्रौद्योगिकीय प्रगति करने एवं उन प्रोद्योगिकियों को विभिन्न क्षेत्रों में अनुकूलित करने हेतु जीवों में पाई जाने वाली जैविक प्रणालियों या स्वयं जीवों का उपयोग, जैव प्रौद्योगिकी कहलाता है।

जैव प्रौद्योगिकी की शाखाओं का रंग वर्गीकरण:

- **गोल्ड बायोटेक्नोलॉजी** या **जैव सूचना विज्ञान**: संगणनात्मक जीवविज्ञान, संगणनात्मक तकनीकों का प्रयोग करके जैविक समस्याओं को संबोधित करता है।
- **रेड बायोटेक्नोलॉजी** (चिकित्सा जैव प्रौद्योगिकी): चिकित्सा और पशु चिकित्सा उत्पादों से संबंधित है।
- **व्हाइट बायोटेक्नोलॉजी** (औद्योगिक जैव प्रौद्योगिकी): अधिक ऊर्जा-कुशल, कम संसाधन खपत करने वाले उत्पादों को बनाने के लिए औद्योगिक जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है।
- **यलो बायोटेक्नोलॉजी** (खाद्य औद्योगिक जैव प्रौद्योगिकी): खाद्य उद्योग में जैव प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग येल्लो बायोटेक्नोलॉजी कहलाता है।
- **ग्रे बायोटेक्नोलॉजी** (पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी): जैव विविधता को बनाए रखने के लिए पर्यावरणीय अनुप्रयोग।
- **ग्रीन बायोटेक्नोलॉजी** (कृषि जैव प्रौद्योगिकी): प्रौद्योगिकी की यह शाखा कृषि हित पर ज़ोर देती है।
- **ब्लू बायोटेक्नोलॉजी** (समुद्री और जलीय जैव प्रौद्योगिकी): ब्लू बायोटेक्नोलॉजी समुद्री संसाधनों के उपयोग पर आधारित है।
- **वायलेट बायोटेक्नोलॉजी** (Violet biotechnology): जैव प्रौद्योगिकी की यह शाखा कानून, नैतिक एवं दार्शनिक मुद्दों से जुड़ी है।
- **डार्क बायोटेक्नोलॉजी** (Dark biotechnology): शाखा के अंतर्गत जैव आतंकवाद एवं जैविक हथियारों का उपयोग होता है।

जीन:

- जीन, वंशानुक्रम की मूल भौतिक इकाई है।
- यह कोशिका में मौजूद डीएनए का एक हिस्सा है जो एक व्यक्तिगत पौधे या जानवर के शारीरिक विकास, व्यवहार आदि को नियंत्रित करता है और माता-पिता से संतान में पारित (ट्रांसफर) होता है।

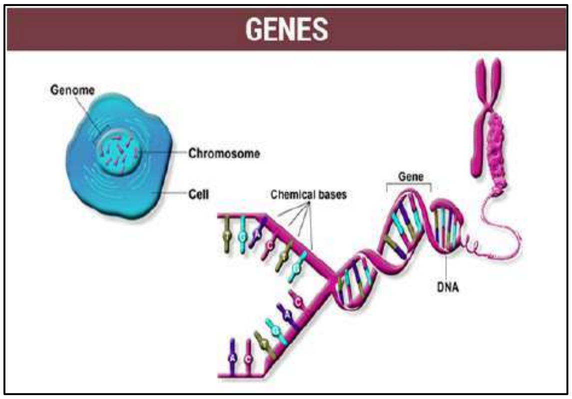

जीनोम:

- एक कोशिका या जीवों में मौजूद जीन या अनुवांशिक सामग्री के पूरे सेट को जीनोम कहते हैं।
- मानव जीनोम **निर्देशों का एक जटिल समूह** (कॉम्प्लेक्स सेट) है, एक निर्देश पुस्तिका की तरह, जो जीवों की वृद्धि और विकास को निर्देशित करते हैं।

जीनोमिक आर्गेनाईजेशन:

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

- यह डीएनए तत्वों के रैखिक क्रम और गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) में उनके विभाजन को संदर्भित करता है।
- हम गुणसूत्रों की **3 डी संरचना** और केन्द्रक के भीतर डीएनए अनुक्रमों की स्थिति के रूप में भी इसका उल्लेख कर सकते हैं।

गुणसूत्र (क्रोमोसोम):

- ये पशुओं और पादप कोशिकाओं के केन्द्रक के अंदर, **धागे की जैसी सरंचनाओं** की तरह होते हैं।
- प्रत्येक गुणसूत्र **प्रोटीन** और **डीऑक्सीराइबोस-न्यूक्लिक एसिड** (डीएनए) के एकल (सिंगल) अणु से बना होता है।
- क्रोमोसोम ,डीएनए का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो यह सुनिश्चित करता है कि डीएनए को बहुसंख्यक कोशिका विभाजनों में सटीक रूप से कॉपी और वितरित किया जाए।
- **नई कोशिकाओं** में गुणसूत्रों की संख्या या संरचना में परिवर्तन होने से गंभीर समस्याएं हो सकती हैं जैसे: डाउन सिंड्रोम, टर्नर सिंड्रोम आदि।

डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड (DNA):

- डीएनए एक **कार्बनिक रसायन** है जिसमें प्रोटीन संश्लेषण हेतु अनुवांशिक सूचना और निर्देश शामिल होते हैं।
- **डीएनए** प्रजनन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसमें आनुवंशिकता, माता-पिता से संतान तक डीएनए के माध्यम से प्रसारित होती है।

राइबोन्यूक्लिक एसिड (RNA):

- आरएनए एक **न्यूक्लिक अम्ल** है जो मुख्य रूप से **प्रोटीन के संश्लेषण** में शामिल होता है, जिसमें डीएनए के **मैसेंजर** निर्देश होते हैं तथा, जिसमें स्वयं अनुवांशिक निर्देश होते हैं।

डीएनए और आरएनए में अंतर:

डीएनए	आरएनए
• इसमें डीऑक्सीराइबोज़ और फॉस्फेट बैकबोन होते हैं जिनके चार अलग-अलग क्षार होते हैं: एडेनिन, साइटोसिन, ग्वानिन और थाइमिन (एसीजीटी)।	• इसमें चार क्षारों के साथ राइबोज और फॉस्फेट बैकबोन होता है: एडेनिन, साइटोसिन, ग्वानिन और यूरैसिल (एसीजीयू)।
• कोशिका केन्द्रक और माइटोकॉन्ड्रिया में पाया जाता है।	• साइटोप्लाज्म, नाभिक और राइबोसोम में पाया जाता है।
• 2-डीऑक्सीराइबोज होते है।	• राइबोज होते है।
• न्यूक्लियोटाइड्स की लंबी श्रृंखला से बंधित दोहरे अणु।	• न्यूक्लियोटाइड्स की छोटी श्रृंखला से बंधित एकल अणु।
• स्व प्रतिकृति करते हैं ।	• आवश्यकता पड़ने पर डीएनए से संश्लेषित होते हैं।

कोशिका

To Buy Notes WhatsApp on 9896160956
This is a Sample pdf

विषय सूची

1	संविधान का निर्माण	1
2	संविधान की प्रमुख विशेषताएँ	4
3	संविधान की उद्देशिका(भूमिका/परिचय)	8
4	संघ व इसके राज्य क्षेत्र	13
5	नागरिकता	17
6	मूल अधिकार	21
7	राज्य के नीति-निदेशक तत्व	38
8	मूल कर्तव्य	42
9	संविधान संशोधन	44
10	संविधान की मूल संरचना सिद्धांत	47
11	संसदीय व्यवस्था	50
12	केंद्र-राज्य संबंध	54
13	अंतर्राज्यीय संबंध	63
14	आपातकालीन प्रावधान	67
15	राष्ट्रपति और राज्यपाल	76
16	उप-राष्ट्रपति	85
17	प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री	89
18	केंद्रीय एवं राज्य मंत्रिपरिषद	91
19	संसद	94
20	संसदीय समितियां	115
21	उच्चतम न्यायालय	118
22	उच्च न्यायालय	124
23	अधीनस्थ न्यायालय	130
24	अधिकरण	133
25	राज्य विधानमंडल	136
26	स्थानीय सरकार	147
27	अनुसूचित एवं जनजातीय क्षेत्र	154
28	कुछ राज्यों के लिए विशेष प्रावधान	157
29	संवैधानिक निकाय	160
30	गैर-संवैधानिक निकाय	165
31	सहकारी समितियाँ	170
32	दल-बदल कानून	172

1. संविधान का निर्माण

संविधान सभा की मांग

- 1924 →संविधान सभा का विचार पहली बार स्वराज पार्टी द्वारा दिया गया था।
- 1934 →संविधान सभा के गठन का विचार एम.एन.रॉय द्वारा रखा गया था।
- 1935 →भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस द्वारा पहली बार भारत के संविधान के निर्माण हेतु आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की माँग की गयी।
- 1940 →इस माँग को अंततः ब्रिटिश सरकार ने सैद्धान्तिक रूप से स्वीकार कर लिया। इसे 'अगस्त प्रस्ताव' (August Offer)के नाम से जाना जाता है।
- 1942 →क्रिप्स के संविधान के प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया।
- 1946 → 'कैबिनेट मिशन योजना' (Cabinet Mission Plan-CMP) को सभी दलों द्वारा स्वीकार किया गया। इसके सदस्य लॉर्ड पैट्रिक लॉरेंस, सर स्टैफ़ोर्ड क्रिप्स और ए. वी. एलेक्जेंडर थे। कैबिनेट मिशन ने द्वि-राष्ट्र एवं दो संविधान सभा की माँग को अस्वीकार कर दिया।

संविधान सभा का गठन

Total Strength	389
1. British India Governors Province	292
2. Chief Commissioners Province	4
3. Princely States	93

- कैबिनेट मिशन योजना के आधार पर नवंबर 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ।
- सीटों का बँटवारा जनसंख्या के आधार पर किया गया।
- ब्रिटिश प्रान्तों से संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली एवं एकल संक्रमणीय मत पद्धति के आधार पर हुआ।
- संविधान सभा का गठन अंशतः निर्वाचित(ब्रिटिश प्रान्तों) एवं नामित सदस्यों(रियासतों के प्रमुखों द्वारा) द्वारा किया गया था।
- ब्रिटिश प्रान्तों से संविधान सभा के सदस्यों का निर्वाचन वहाँ की विधायिका से हुआ था।
- महात्मा गाँधी संविधान सभा का हिस्सा नहीं थे।
- देशी रियासतों को आवंटित 93 सीटें नहीं भर पायीं थीं, क्योंकि उन्होंने संविधान सभा से अलग रहने का फैसला किया था।

संविधान सभा की कार्यवाही

- 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक आयोजित हुई (मुस्लिम लीग ने बैठक का बहिष्कार किया) ।
- वरिष्ठतम सदस्य डॉ. सचिदानंद सिन्हा को संविधान सभा का अस्थाई अध्यक्ष चुना गया। अस्थाई अध्यक्ष की नियुक्ति फ्रेंच परम्परा के अनुसार की गई थी।
- बाद में डॉ. राजेंद्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थाई अध्यक्ष चुना गया।
- उपाध्यक्ष (दो)→ एच.सी. मुखर्जी और वी.टी. कृष्णामाचारी।

उद्देश्य प्रस्ताव

- जवाहरलाल नेहरू ने 13 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा के ऐतिहासिक प्रस्ताव को प्रस्तुत किया था।
- इसमें संवैधानिक संरचना के मूल तत्व और दर्शन निहित थे।
- इस प्रस्ताव को 22 जनवरी, 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकार किया गया था।
- वर्तमान में भारतीय संविधान की उद्देशिका(Preamble), इसी उद्देश्य प्रस्ताव का संशोधित रूप है।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के अनुसार परिवर्तन

- देशी रियासतों और बचे हुए मुस्लिम लीग (इंडियन डोमिनियन से) के सदस्य धीरे-धीरे संविधान सभा से जुड़ने लगे।
- 3 जून, 1947 को माउंटबेटन योजना (Mountbatten plan) को स्वीकृति मिली (यह योजना भारत के विभाजन हेतु थी) ।
- भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 ने संविधान सभा की स्थिति में दो बदलाव किए -
    1. संविधान सभा एक संप्रभु संस्था बन गयी, जो स्वेच्छा से संविधान का निर्माण कर सकती थी।
    2. संविधान सभा को दो प्रकार का कार्यों सौंपा गया (दोनों कार्यों को अलग-अलग रूप से करना था) → भारत के लिए आम कानून का निर्माण व उन्हें लागू करना (जी.वी. मावलंकर की अध्यक्षता में) और स्वतंत्र भारत के लिए संविधान का निर्माण करना (डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में); ये 26 नवंबर, 1949 तक जारी रहे।
- संविधान सभा से मुस्लिम लीग के सदस्य अलग हो गए थे। इसलिए संविधान सभा की सदस्य संख्या 389 से घटकर 299 रह गयी।

संविधान सभा के अन्य कार्य

- मई, 1949 → राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता की पुष्टि।
- 22 जुलाई, 1947 → राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया गया।
- 24 जनवरी, 1950 → राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रीय गान को अपनाया गया।
- 24 जनवरी, 1950 → डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में चुना गया।
- 24 जनवरी, 1950 → संविधान सभा की अंतिम बैठक हुई। हालांकि इस संविधान सभा ने ही यह 26 जनवरी,1950 से लेकर आम चुनावों के बाद नयी संसद के गठन(मई, 1952) तक अन्तरिम संसद के रूप में कार्य किया।
- कुल सत्र - 11
- कुल समय - 2 वर्ष, 11 महीने, 18 दिन

मुख्य समितियाँ

- संघ शक्ति समिति / संघ संविधान समिति / राज्य समिति (राज्यों से समझौते हेतु) →जवाहरलाल नेहरू
- प्रक्रिया नियम समिति / संचालन समिति → डॉ. राजेंद्र प्रसाद
- प्रांतीय संविधान समिति → सरदार पटेल
- प्रारूप समिति → डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

- मूल अधिकारों, अल्पसंख्यकों और जनजातियों और बहिष्कृत क्षेत्रों हेतु परामर्शी समिति → सरदार पटेल
- संविधान सभा की सभी समितियों में प्रारूप समिति सबसे महत्वपूर्ण थी। इसका गठन 29 अगस्त, 1947 को किया गया था। इसमें 7 सदस्य शामिल थे।

संविधान का प्रभाव में आना (ENACTMENT OF THE CONSTITUTION)

- संविधान के प्रारूप के प्रत्येक प्रावधान(clause by clause) पर चर्चा के बाद इसे 26 नवंबर, 1949 को अपनाया गया। उस समय इसमें उद्देशिका, 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियां शामिल थीं।
- संविधान के पूर्ण रूप से अधिनियमित होने के बाद उसके उद्देशिका को लागू किया गया था।

संविधान का प्रवर्तन (ENFORCEMENT OF THE CONSTITUTION)

- संविधान के कुछ प्रावधान 26 नवंबर, 1949 को स्वतः ही लागू हो गए थे। नागरिकता, चुनाव, तदर्थ संसद, अस्थायी और परिवर्तनशील नियम और छोटे शीर्षकों से जुड़े कुछ प्रावधान (अनुच्छेद 5, 6, 7, 8, 9, 60, 324, 366, 367, 379, 380, 388, 391, 392 और 393)।
- संविधान के शेष प्रावधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुए थे क्योंकि 26 जनवरी, 1930 को पूर्ण स्वराज दिवस मनाया गया था। इस दिन को संविधान के शुरुआत के दिन तथा गणतन्त्र दिवस के रूप में देखा जाता है।
- संविधान के लागू होने के बाद भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 और भारत सरकार अधिनियम, 1935ई. निरस्त हो गए। हालाँकि एबोलिशन आफ प्रिवी काउंसिल ज्यूरिडिक्सन एक्ट,1949 (Abolition of Privy Council Jurisdiction Act ,1949) लागू रहा।

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- संविधान सभा का चिन्ह → हाथी।
- सर वी.एन. राव → संविधान सभा के संवैधानिक सलाहकार थे।
- एच. वी. आर. अयंगर → संविधान सभा के सचिव थे।
- एस. एन. मुखर्जी → संविधान सभा के मुख्य प्रारूपकार (ड्राफ्ट्समैन) थे।
- प्रेम बिहारी रायज़ादा→ संविधान के सुलेखक(calligrapher) थे।
- नंद लाल बोस और बी. आर. सिन्हा → संविधान के मूल संस्करण का सौंदर्यीकरण व सजावट।
- वसंत कृष्ण वैद्य→ संविधान के मूल संस्करण का हिंदी सुलेखन किया।